रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

शंकाअें और प्रोत्साहनकी कमी

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ३०

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २४ सितम्बर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य

१

[ता० २९–६–'५५ को कोरापुट पड़ाव (अुत्कल) पर दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

अिस देशमें करोड़ों लोग रहते हैं और चीनको छोड़कर अिससे बड़ा देश दुनियामें नहीं है। और यहां पर अनेक भाषायें, धर्म, जातियां आदि हैं। यह सब हमारा भाग्य है, वैभव है। जैसे संगीतमें अनेक स्वर होते हैं तो वह संगीतका वैभव होता है और अुसका माधुर्य बढ़ानेवाला होता है, अुसमें अितना ही देखना होता है कि सारे स्वर विसंगत न बनें। सात स्वरोंके बजाय अगर अेक ही स्वर चलता तो अच्छा संगीत नहीं बनता। अिसलिअे प्रत्येक स्वरमें अपना अलग माधुर्य और सौंदर्य है। अुसी तरहसे हिन्दुस्तानमें जो अलग अलग कौमें रहती हैं अुनकी अपनी अपनी विशेषतायें हैं। परन्तु जैसे संगीतमें सात स्वर अेक-दूसरेके विरोधमें गये तो मधुर संगीत नहीं बनता है, अुसी तरह अगर देशमें परस्पर प्रेम नहीं रहा तो अिस देशकी विविधताका लाभ हम नहीं अुठा सकेंगे।

हिन्दुस्तान पर बाहरके लोगोंने सैकड़ों वर्षों तक राज्य किया। अिसका कारण यह नहीं था कि हिन्दुस्तानमें शौर्यकी कमी थी, बल्कि यही था कि यहां पर अेकरसता की कमी थी। यहां पर जो अनेक समाज रहते थे, वे अेकरस होकर नहीं रहते थे।

हिन्दुस्तानके अितिहासकी ओर देखते हैं तो हमें मालूम होता है कि स्वराज्य-प्राप्तिके बाद हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि अपने समाजको अेकरस बनायें और सारे कृत्रिम भेदोंको मिटा दें। छूत-अछूतका भेद, अूंच-नीचका भेद, गरीबी और अमीरी, अपढ़ और पढ़ा-लिखा आदि सारे भेद मिटाने होंगे।

दुनियामें आज यही हो रहा है। अमेरिका और रशिया अेक-दूसरेसे डरते हैं और दोनों शस्त्रास्त्र बढ़ाते हैं। अुसी तरह पाकिस्तान सोचता है कि हिन्दुस्तानका हमला होगा और हिन्दुस्तान सोचता है कि हमें सजग रहना चाहिये। तो दोनों सेना रखते हैं। गांवके किसानोंकी तरह ये बड़े बड़े देश भी अेक-दूसरेसे डरते हैं। अभी पंडित नेहरू अिन बड़े देशोंको समझानेकी कोशिश कर रहे हैं कि जैसे गांवके किसान अेक-दूसरेके साथ मिल-जुल कर रह सकते हैं, अुसी तरह तुम भी आपसअ ापसमें मिल-जुलकर रहोगे तो किसीको भी शस्त्रास्त्र बढ़ानेकी जरूरत नहीं पड़ेगी। अुतना पैसा बचेगा और गरीबों पर खर्च होगा, जिससे कि सबकी अुन्नति होगी। लेकिन ये जो भिन्न-भिन्न देशोंके नेता होते हैं, अुनको जिन्होंने चुना है अुन्हींके स्वभावके अनुरूप ये चलते हैं। आखिर प्रजातंत्रमें जैसी प्रजा होती है अुसीके अनुसार सरकार बनती है। जिन देशोंके किसान आपसमें मेलजोल नहीं कर सकते हैं अुन देशोंकी सरकारें भी अेक-दूसरेके साथ मेलजोल नहीं कर सकतीं। अिसलिअे हमें बुनियाद मजबूत बनानी होगी। तभी शिखर मजबूत होगा। अिन दिनों मैं गांव-गांव जाकर यही समझाता हूं कि गांवका अेक परिवार बनेगा तो ग्राम-मंदिरकी बुनियाद बनेगी। और अिसी तरहसे जब भिन्न-भिन्न देशोंका सहकार होगा तो विश्व-मंदिर बनेगा। अिसलिअे मैंने बार बार कहा है कि भूदान-यज्ञसे विश्व-शांति स्थापित होनेमें सहायता होगी। भूदान-यज्ञसे अेक अेक गांव अेकरस बनेगा तो फिर अेक देश भी अेकरस बनेगा, फिर अेक खंड अेकरस बनेगा, और फिर यह विश्व अेकरस बनेगा। अिस तरह अेकरस बनानेकी जो प्रक्रिया है, वह गांवसे आरम्भ करनी होगी।

२

[ता० १–७–'५५ को जयपुर पड़ाव (कोरापुट, अुत्कल) पर दिये गये प्रार्थना-प्रवचनसे।]

हम अेक महान देशके निवासी हैं। तो हमारा कर्तव्य और जिम्मेवारी भी अुतनी ही महान है। कुछ लोगोंका खयाल है कि समुद्रसे लेकर हिमालय तक यह जो देश बना है, वह अर्वाचीन कालमें ही बना है और अंग्रेजोंके राज्यके परिणामस्वरूप ही बना है। कुछ लोग तो यहां तक कहते हैं कि अंग्रेजी राज्यने और अंग्रेजी भाषाने हमारे देशको अेक-राष्ट्रीयताकी देन दी है। लेकिन यह खयाल गलत है। अितिहास जाननेवालोंको मालूम है कि प्राचीन कालसे समुद्रसे लेकर हिमालय तक यह अेक देश माना गया है। वाल्मीकिने रामायणके आरंभमें ही रामचंद्रका गुण वर्णन करते हुअे अुनके दो बड़े गुण बताये और अुसके वास्ते अुन्होंने दो मिसालें दीं। अुन्होंने लिखा कि रामचन्द्र समुद्रके जैसे गम्भीर और हिमालयके जैसे स्थिर वृत्तिके थे। "समुद्र अिव गाम्भीर्ये स्थैर्ये च हिमवान् अिव"। दक्षिणका समुद्र और अुत्तरका हिमालय लेकर रामचन्द्रका गुण वर्णन किया। तो अिसमें कवि सूचित करना चाहते थे कि हिन्दुस्तानकी जनता समुद्रवत् गंभीर और हिमालयके जैसी स्थिरता-युक्त है। रामचन्द्र राष्ट्र-पुरुष थे। अिसलिअे राष्ट्रके सद्-गुणोंकी अुपमा अुनके गुणोंको दी गअी। अगर अुन दिनों हिमालयसे लेकर कन्याकुमारी तक अेक देश नहीं होता तो अिस तरहकी अुपमा नहीं दी जा सकती थी। प्राचीन पुराणोंमें अुल्लेख मिलता है और दक्षिणके लोग मानते हैं कि रामचन्द्रने रामेश्वरमें शिवलिंगकी स्थापना की थी। मैंने यह सारा अिसलिअे बताया कि हम लोगोंको समझना चाहिये कि अत्यंत प्राचीन कालसे लेकर आज तक हमारी जो राष्ट्रीयता बनी हुअी है, वह स्वयंभू है, कृत्रिम या बनावटी नहीं।

अुन दिनोंमें भी, जब कि आजके जैसे यातायातके शीघ्र साधन नहीं थे, वे लोग हमसे कम अेक-राष्ट्रीयताका अनुभव नहीं करते थे। आज तो हिन्दुस्तानमें कअी कारणोंसे छोटे छोटे अभिमान पैदा हुअे हैं। जैसे महाराष्ट्रियोंका महाराष्ट्राभिमान, बंगालियोंका बंगाभिमान आदि। लेकिन अुन दिनों यातायातके

www.vinoba.in

शीघ्र साधन न होते हुअे भी वे लोग सारे भारतके लिअे ही प्रेम रखते थे। संस्कृत भाषामें "दुर्लभं भारते जन्म" अैसा शब्द ही सुननेको मिलता है, अंग देशमें, बंग देशमें, अुत्तर देशमें, या गुर्जर देशमें जन्म दुर्लभ है, अैसा वाक्य संस्कृत भाषामें कहीं भी नहीं मिलता है। भारतमें प्राचीन कालसे अितनी विशालता, व्यापकता और हार्दिक अेकता मौजूद है, जो भारतकी सबसे बड़ी सम्पत्ति है। आज भी हमारा हिन्दुस्तान देश रूसको छोड़ कर बचे हुअे युरोपके जितना बड़ा है। अुतने युरोपमें कअी अलग अलग राष्ट्र बने हैं और अुन सबको अेक राष्ट्र बनानेकी बात न मालूम कब सिद्ध होनेवाली है। बेल्जीयम, हालैंड जैसे छोटे छोटे देश भी अपनेको स्वतंत्र राष्ट्र समझते हैं। वैसे अुन देशोंके बीच न कोअी कृत्रिम रुकावट है, न स्वाभाविक रुकावट है। जैसे हम अेक जिलेसे दूसरे जिलेमें बड़े मजेसे जा सकते हैं, अुसी तरह जर्मनीसे फ्रांसमें जा सकते हैं। लेकिन अुन्होंने अलग अलग राष्ट्रके नाते अपना अभिमान रखा है और वे अपनेको अेक-दूसरेके दुश्मन मानते हैं। वैसे हिन्दुस्तानके भिन्न भिन्न प्रान्तोंमें लड़ाअियां चलीं, अितने बड़े देशमें लड़ाअियां होती हैं तो आश्चर्यकी बात नहीं है। परन्तु अुन लड़ाअियोंको यहांके और बाहरके लोगोंने गृह-युद्ध या अन्तःकलह कहा, राष्ट्रीय युद्ध नहीं माना। अुधर अिंग्लैंड और आयरलैंड या फ्रांस और जर्मनीके बीच जो लड़ाअियां होती थीं, अुनको गृह-युद्ध नहीं बल्कि राष्ट्रीय युद्ध कहा गया। अिसका कारण यही है कि युरोपमें वह विशाल हृदय मौजूद नहीं है, जो हिन्दुस्तानमें प्राचीन कालसे लेकर आज तक मौजूद है, और जो हमारी बड़ी विरासत है।

अिस देशकी और अेक खूबी यह है कि यहांके राजा चाहे आपस आपसमें लड़े हों तो भी यहांके किसी राजाने, जबकि अुसके हाथमें बहुत सत्ता थी तब भी, हिन्दुस्तानके बाहरके किसी देश पर हमला नहीं किया। चाहे समुद्रगुप्त हो, श्रीहर्ष हो या और कोअी सम्राट् हो, किसीने भी हिन्दुस्तानके बाहर आकांक्षा नहीं रखी। जिस देशका दो तीन हजार सालका अितिहास मौजूद है, अुस देशने अपने अुत्कर्षके समय भी दूसरे देश पर आक्रमण नहीं किया, यह कोअी आकस्मिक घटना नहीं है, यह यहांकी संस्कारिताका लक्षण है। अिस व्यापकता, बुद्धिकी विशालता या जिसे हम अहिंसा कह सकते हैं, अुसीके कारण यह देश बड़ा बना।

दुनिया भरके लोग हिन्दुस्तानमें आये। हिन्दुस्तानने अपना दरवाजा हमेशा खुला रखा। यहां पर कुछ टोलियां बहुत प्रेमसे आअीं, और पारसियोंके जैसी कुछ टोलियां आश्रयके लिअे आअीं, तो हमने अुनको प्यारके साथ आश्रय दिया। कुछ टोलियां झगड़ेके साथ आअीं, फिर भी आखिर वे यहां बस गअीं और यहांके लोगोंने अुनको हजम कर लिया, अपनेमें मिला लिया। लेकिन अंग्रेज लोग यहां आये तो यहां पर बसनेकी नीयतसे नहीं आये, अिस देशसे लाभ अुठानेकी नीयतसे आये थे। दूसरा फर्क यह था कि अंग्रेज यहां पर आये तो अुनके पीछे विज्ञानका बल था, जो अुन दिनोंमें हिन्दुस्तानमें नहीं था। अंग्रेजोंने यहांके राजाओंकी आपस-आपसकी फूटका लाभ अुठाया और परिणामस्वरूप हिन्दुस्तान अुनके हाथमें आ गया। अितनी मजबूतीसे हाथ आया कि वे सारे देशको निःशस्त्र बना सके। अंग्रेजोंके आनेके पहले यह प्रयोग न किसीने किया था, न किसीने अैसा सोचा था और न कोअी सोचता तो भी कर पाता। जिनके हाथमें शस्त्र है अुनको निःशस्त्र कैसे बनाया जा सकता है? लेकिन अंग्रेजोंके साथ विज्ञानका बल आया अिसलिअे अुनकी हिन्दुस्तानके दिल और दिमाग पर अितनी मजबूत पकड़ जम गअी कि अुनकी आज्ञा यहां पर चली।

अंग्रेजोंके पास विज्ञानका बल तो था, लेकिन आत्मज्ञानका बल नहीं था। अिसलिअे वे यहांकी प्रजासे प्यार नहीं कर सकते थे, अुससे लाभ ही अुठा सकते थे। परिणाम यह हुआ कि हिन्दुस्तान दिन ब दिन दुर्बल होता गया, लोग भूखसे मरने लगे और असंतोष बढ़ता गया। आखिर कांग्रेसकी स्थापना हुअी और अेक बड़ा भारी आन्दोलन शुरू हुआ। अुस समय यह कहना भी मुश्किल था कि हम स्वराज्य चाहते हैं। वन्दे मातरम्का गीत गाना गुनाह था। खादीकी टोपी पहनना अपराध माना जाता था। यहां तक होता था कि व्यायामके लिअे कोअी अखाड़ा खुलता तो अुस पर भी राज्यकी नजर जाती थी। हमने बड़ोदामें देखा है कि हमारे अखाड़ेमें सरकारकी तरफसे खुफिया पुलिस व्यायाम करनेके लिअे आते थे। सरकारको लगता था कि अिन जवानोंकी भावना कहीं अैसी न बढ़ जाय कि अेक दिन हिन्दुस्तानमें स्वराज्य ही स्थापित हो जाय।

अैसी हालतमें हिन्दुस्तानको गांधीजीका दर्शन हुआ। अुन्होंने जनताको समझाया कि "तुम लोग निःशस्त्र हो गये हो, परंतु स्वराज्य-प्राप्तिके लिअे शस्त्रकी जरूरत ही नहीं है। दूसरे देशों पर हमला करनेके लिअे शस्त्रोंकी जरूरत है परन्तु अपने देशको आजाद करनेके लिअ केवल प्रजाकी अिच्छा मात्र समर्थ है। अिसलिअे हे भारतीय लोगो, तुमको डरनेका कोअी कारण नहीं है। डर छोड़ो और अितना ही कहो कि हम स्वराज्य चाहते हैं, तो अुस चाहने भरसे ही स्वराज्य मिलेगा।" अेक जमाना था कि जब लोकमान्य तिलकके जैसा कोअी अेकाध मनुष्य गिरफ्तार होता था तो अुसका सारे देश भरमें गौरव होता था। क्योंकि जेल जाना अेक बड़ा कठिन काम माना जाता था। लेकिन गांधीजीके जमानेमें हजारों लोग जेल गये और जेल जाना अेक पौष्टिक खुराक माना गया। गांधीजीके अभय वचनके परिणामस्वरूप हिन्दुस्तानमें कुछ निर्भयता आ गअी। गांधीजीने देशको अेक बात और समझाअी कि आपस आपसका कलह नहीं होना चाहिये, हम पहलेसे ही अेक थे और आज भी अेक हैं, यह महसूस करो तो वह अेकता ही हमारी ताकत बनेगी।

अिस तरह गांधीजीने अेकता और निर्भयताका संदेश देशको दिया। और जब मामला पक गया तो अुन्होंने अंग्रेजोंसे कहा कि कृपा करके अब भारत छोड़िये। भूतके खिलाफ कोअी मंत्र बोला जाता है तो आरंभमें भूत बिलकुल चिढ़ जाता है। अुसी तरह अंग्रेज खूब चिढ़ गये और अुन्होंने काफी लोगोंको जेलमें डाल दिया। फिर देश बिलकुल शांत हो गया तो अुन्होंने सोचा कि अब हमारी हिन्दुस्तान पर पकड़ और मजबूत हो गअी। अुन दिनों हम जेलमें थे और वहां पर चर्चा चलती थी कि बाहर बिलकुल सुनसान हो गया है तो कैसे स्वराज्य मिलेगा। तो मैंने अेक व्याख्यानमें समझाया कि जेलके बाहर शांति हो गअी है अिस बारेमें मत सोचो, हम जो जेलमें हैं, वे पहलेसे ज्यादा मजबूत बने हैं या कमजोर, अिसी पर सोचो। जो जेलमें थे अुनका बल तो बढ़ गया था, वे ज्यादा निर्भय बन गये थे। अुन्होंने जेलमें गीताका अध्ययन किया। हमारा गीता-प्रवचन जो अिन दिनों फैला है, वे सारे व्याख्यान जेलमें ही दिये गये थे। अिसलिअे मैंने कहा कि जेलोंमें हम आश्रमनिवासका अनुभव कर रहे हैं, हमारी तपस्या बढ़ रही है, तो समझ लीजिये कि मंत्रके कारण आज भूतको जो संताप हो रहा है अुसके परिणामस्वरूप वह भूत खतम होनेवाला है। वैसे आज भी अंग्रेज दुनिया भरमें मौजूद हैं। गांधीजीने हमें अुनके खिलाफ कोअी बात नहीं सिखाअी थी, अुन्होंने सिखाया था कि सब पर प्रेम करो। लेकिन हम केवल अितना ही चाहते थे कि भूत मिटना चाहिये और आखिर वह मिट गया।

दुनियाके भिन्न भिन्न देशोंमें आजादीकी लड़ाअियां चलीं, लेकिन हिन्दुस्तानकी आजादीकी लड़ाअी अपूर्व थी। स्वराज्य-प्राप्तिका अेक नया साधन निर्माण हुआ था, निःशस्त्र हिन्दुस्तानमें अेक नये शस्त्रकी

www.vinoba.in

आविष्कार हुआ था, जिसका असर दुनिया पर हुआ। मैं आपको यह सारी कहानी अिसलिअे कह रहा हूं कि आपमें से बहुत सारे जवान हैं और आप जानते नहीं कि हमें बड़े पराक्रमसे, कठिन साधना करके, आत्म-शक्तिसे स्वतंत्रता मिली है। मैं चाहता हूं कि आप लोगोंको अिसका भान हो जाय कि हमको आज वह मौका मिला है जो दो तीन हजार सालोंमें नहीं मिला था। अब हमें निर्भयता और अेकताकी बुनियाद पर सारे देशको अेक बनाना है और वह मिसाल दुनियाके सामने रखते हुअे अुसके जरिये दुनियाकी सेवा करनी है। हमें यह अेक मिशन प्राप्त हुआ है।

स्वराज्य प्राप्तिके पहले हर किसी देशमें जो शक्ति होती है, वह राजनीतिमें पड़कर ही विकसित हो सकती है। जब तिलक महाराजसे पूछा गया था कि स्वराज्य-प्राप्तिके बाद आप क्या करेंगे, कौन मंत्री बनेंगे, तो अुन्होंने अुत्तर दिया था कि मैं कोअी मंत्री नहीं बनूंगा। मैं या तो गणितका प्रोफेसर बनूंगा या वेदोंका संशोधन करूंगा। जब तक हमारा देश परतंत्र है, तब तक हमारी सारी विद्या निकम्मी है। अिसलिअे मैं विद्याकी अुपासनामें नहीं लगता हूं परंतु स्वराज्य-प्राप्तिके बाद विद्याकी अुपासना ही करूंगा। तिलक महाराज बड़े विद्वान थे, लेकिन वे रातको जग कर चोरीसे विद्या हासिल करते थे। अगर अंग्रेजोंकी कृपासे अुनको छः सालकी जेल नहीं मिली होती, तो अुनसे गीता-रहस्य नहीं लिखा जाता। फिर तो वे वही लिखते रहते जिससे जनता जागृत हो सके और रोजमर्राके मसले हल करनेका अुपाय मिल सके। अिस तरह स्वराज्य-प्राप्तिके पहले देशमें जितनी बुद्धिमत्ता होती थी, अुस बुद्धिमत्ताका कार्य स्वराज्य प्राप्तिके काममें लगनेमें ही था। स्वराज्य प्राप्तिके पहले सारी ताकत राजनैतिक क्षेत्रमें होती है। अुसमें लोगोंको खूब त्याग करनेका मौका मिलता है और लोगोंकी शुद्धि होती है।

अब स्वराज्य प्राप्तिके बाद हमें सोचना चाहिये कि शक्तिका अधिष्ठान कहां है। हममें से बहुतसे लोगोंको आज भी लगता है कि सरकार चलानेमें ही आज ज्यादासे ज्यादा शक्ति है। हम मानते हैं कि स्वराज्य प्राप्तिके बाद सरकार चलाना हमारा कर्तव्य हो जाता है और कुछ अच्छे लोगोंको अुसमें लगना चाहिये। लेकिन अब शक्तिका अधिष्ठान राजनीति नहीं हो सकती, शक्तिका अधिष्ठान सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र होगा। आज राजनैतिक क्षेत्रमें काम करनेके लिअे क्या त्याग करना पड़ता है? वहां पर बहुत हुआ तो मत्सर ही होता है। गांधीजी हमेशा कांग्रेसके सामने कोअी न कोअी त्यागका और दुःख-सहन करनेका कार्यक्रम रखते थे। अुन दिनों चार आने देकर कांग्रेसका सदस्य होनेका मतलब ही था अंग्रेजोंके खिलाफ खड़े होकर संकट मोल लेना। आज कांग्रेसका सदस्य बननेसे लायसेंस या परमिट मिलनेकी संभावना है, अुसमें कुछ त्यागका माद्दा नहीं है। यह समझना जरूरी है कि स्वराज्यमें यद्यपि राज्य चलाना आवश्यक है तो भी शक्तिका अधिष्ठान वहां नहीं है, क्योंकि वहां त्यागका मौका नहीं है।

यह ठीक है कि वहां जानेवालोंको भी जनक महाराजके जैसे अनासक्त वृत्तिसे रहना चाहिये तो वे भी त्यागी हो सकते हैं। फिर भी वहां पर त्यागके लिअे स्वाभाविक क्षेत्र नहीं है। जनक महाराज बावजूद राजसत्ताके त्यागी थे, राजसत्ताके कारण त्यागी नहीं थे। रामचन्द्र जंगल गये तो अुनके आदेशसे भरत अयोध्यामें राज्य चलाते थे। लेकिन जितनी तपस्या रामचन्द्रने जंगलमें की, अुतनी ही तपस्या भरतने राज चलाते हुअे की। फिर जब वे दोनों मिले तो कवि वर्णन करता है कि दोनों कृश शरीर हुअे थे, दोनोंकी जटा बढ़ी थी, दोनोंके चेहरे भी समान थे अिसलिअे मालूम ही नहीं होता था कि अिनमें से कौन जंगल गया था और कौन राज्य चलाता था। लेकिन आखिर मालूम था कि राम ज्येष्ठ भाअी हैं, अिसलिअे अुनका शरीर कुछ बड़ा था। अिसका मतलब यह है कि भरतने अयोध्यामें रहकर अुतनी ही तपस्या और त्याग किया जितना रामने जंगल जाकर किया। परंतु भरतका त्याग बावजूद राजसत्ताके था, राजसत्ताके कारण नहीं था। परंतु रामचन्द्रकी तपस्या अत्यन्त स्वाभाविक थी। न सिर्फ रामकी बल्कि अुनके सब साथियोंकी भी तपस्या हुअी, क्योंकि जंगलमें तपस्याके लिअे स्वाभाविक क्षेत्र था। लेकिन अुधर भरतकी तो तपस्या हुअी, लेकिन राज्य चलानेवाले अुनके साथियोंकी तपस्या नहीं हुअी।

मैं यह कहना चाहता हूं कि जिस क्षेत्रमें त्याग और तपस्याके लिअे स्वाभाविक मौका है अुसी क्षेत्रमें शक्तिका अधिष्ठान होता है। अिसलिअे यद्यपि आज हममें से कुछ लोगोंका यह कर्तव्य है कि राजसत्तामें रहकर काम करें तो भी बहुतसे लोगोंको यह समझना चाहिये कि शक्तिका अधिष्ठान सामाजिक और आर्थिक स्वतंत्रता हासिल करनेमें है। और आज हमें वही काम करना है। जिस जमानेके जवानोंके सामने त्याग और तपस्या करनेका मौका है अुनके जैसा भागवान दूसरा कोअी नहीं है। रामचन्द्रको राज्याभिषेक होने जा रहा था। लेकिन दूसरे दिन जाहिर हुआ कि अुनको वनमें जाना है। तो तुलसीदासजी लिखते हैं कि रामचन्द्रको वह सुनकर अत्यन्त आनन्द हुआ। जैसे कोअी जंगलका हाथी पकड़कर लाया हुआ हो और अुसकी जंजीरें टूट गअीं तो वह आनन्दसे छलांग मारकर जंगलमें भाग जाता है, अुसी तरह रामजी जंगलका नाम सुनकर आनन्दित हुअे।

मैं अपने मनमें सोचता था कि स्वराज्य प्राप्तिके बाद हमारे जवानोंको अगर कोअी त्यागका मौका नहीं है तो यह मानना होगा कि स्वराज्यके पहलेकी हालत सौभाग्यकी थी। लेकिन परमेश्वरकी हिन्दुस्तान पर कृपा है अिसलिअे वह अेकके बाद अेक त्यागका कार्यक्रम हिन्दुस्तानके सामने अुपस्थित कर देता है। गांधीजीके जमानेमें जवानोंके सामने जो त्यागका कार्यक्रम था, अुससे ज्यादा त्यागका कार्यक्रम परमेश्वरकी कृपासे आपके और हमारे सामने अुपस्थित हुआ है। जो लोग जेल गये थे, अुनसे मैं पूछना चाहता हूं कि आपने क्या त्याग किया? राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबूने पुरी सम्मेलनमें अिसका जिक्र किया था कि जब गांधीजीके आवाहन पर सैकड़ों लोग जेल जाने लगे, अुनका डर टूट गया, तो अंग्रेजोंने अेक युक्ति निकाली। मनुष्यका डर टूटा तो भी लोभ टूटना मुश्किल होता है। गीताने कहा है कि काम, क्रोध और लोभ ये तीन नरकके बड़े भयानक दरवाजे हैं। मनुष्यमें ये तीनों होते हैं। परंतु तीनोंमें मनुष्यका सबसे ज्यादा शत्रु है लोभ। अुसकी संग्रह वृत्तिकी कोअी सीमा नहीं है। मनुष्य कितना भी क्रोधी बने तो भी वह शेरसे ज्यादा क्रोधी नहीं बन सकता। मनुष्य कितना भी कामी बने तो भी चक्रवाक पक्षीके समान कामी वह नहीं बन सकता। लेकिन मनुष्य जितना लोभी बन सकता है अुसकी बराबरी न चक्रवाक कर सकता है न शेर। अिसलिअे जब अंग्रेजोंने देखा कि ये लोग जेलसे नहीं डरते, तो अुन्होंने जुर्माना करना और घरमें जाकर पैसा हासिल करना शुरू किया। वहां पर हमारे लोग कमजोर साबित हुअे।

गांधीजीके जमानेमें लोगोंको भय छोड़नेकी बात सिखाअी गअी थी। आज आप लोगोंके सामने भूदानके निमित्तसे लोभ छोड़नेका कार्यक्रम अुपस्थित है। राजनैतिक आजादी प्राप्त करनेके बाद देशको सामाजिक और आर्थिक आजादी प्राप्त करनेका कार्यक्रम अुठाना पड़ता है। अुसीमें शक्तिका स्रोत है। आज विनोबा चाहे जितना जोरदार व्याख्यान दे तो भी सरकार अुसे गिरफ्तार नहीं करेगी। हम समझते हैं कि आज हिन्दुस्तानमें जितनी गालियां दी जा सकती हैं अुतनी दूसरे देशमें नहीं दी जा सकतीं। अिसको मैं अपने देशका गौरव मानता हूं, क्योंकि हमारे देशमें अितनी स्वतंत्रता है।

भूदान-यज्ञमें से अेक यज्ञ-पुरुष निर्माण हुआ है और राष्ट्रको कह रहा है कि हरअेकको अपनी जमीन और संपत्तिका छठा हिस्सा

www.vinoba.in

समाजके लिअे देना चाहिये। यह हमारा अहोभाग्य है कि अैसा अुत्साहदायी कार्यक्रम, आर्थिक आजादीका और आर्थिक समानता प्राप्त करनेका कार्यक्रम, हमारे सामने अुपस्थित है जो हमें त्याग करनेके लिअे कह रहा है। हमारे ऋषियोंने हमें मंत्र दिया है कि "न कर्मणा, न प्रजया, न धनेन, त्यागेन अमृतत्वमानषुः"। कर्मसे, प्रजा अुत्पन्न करनेसे, या धन कमानेसे अमृतत्वकी प्राप्ति नहीं हो सकती है। त्यागसे ही अमृतत्व प्राप्त हो सकता है। बहुत खुशीकी बात है कि यह जो त्यागका कार्यक्रम हिन्दुस्तानके सामने अुपस्थित हुआ है वह सब लोगोंको प्रिय हुआ है; चाहे मोहके कारण कोअी त्याग न कर सके, तो भी सारे हिन्दुस्तानको यह प्रिय हो गया है।

विनोबा

हरिजनसेवक

२४ सितम्बर १९५५

शंकाअें और प्रोत्साहनकी कमी

सीतापुर, अुत्तरप्रदेशके ता० २० अगस्त १९५५ के अेक अखबारी संवादमें बताया गया है कि अुत्तरप्रदेश कांग्रेस कमेटीने द्वितीय पंचवार्षिक योजना पर अेक प्रस्ताव पास किया है, जिसमें अुसने केन्द्रीय सरकार और योजना-कमीशनका ध्यान अुत्तरप्रदेशकी गरीबी, औद्योगिक पिछड़ेपन और बढ़ती हुअी बेकारीकी तरफ खींचते हुअे यह मांग की है कि वहां भारी अुद्योगोंकी स्थापना की जानी चाहिये।

अुक्त प्रस्तावमें आगे बिजलीकी योजनाओंको बढ़ाकर राज्यमें जगह-जगह बिजलीकी शक्ति मुहैया करने और अिस तरह भारी अुद्योगोंके विकासमें सहायता करनेकी आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

समाचार आगे बतलाता है कि प्रस्तावमें बेकारीकी चर्चा करते हुअे बेकारी-निवारणके अुपायके रूपमें छोटे पैमानेवाले अुद्योगोंके महत्त्व पर भी जोर दिया गया है।

अिस समाचारको पढ़कर मुझे लगा कि हमारे आर्थिक विचारों और योजना-कार्यमें आजकल जो विचार-भ्रान्ति पायी जाती है, अुसका यह अेक बहुत ही स्पष्ट अुदाहरण है और राष्ट्रके प्रयत्नों पर अुसका तदनुसार असर होता है।

अैसे प्रस्तावोंके साथ अकसर अुनके अन्तमें जनताका आवाहन करते हुअे कुछ अिस तरहके शब्द जोड़ दिये जाते हैं कि वह प्रस्तुत पंचवर्षीय योजनाओंके लिअे जो भी त्याग और परिश्रम आवश्यक हो अुसे खुशीके साथ करे। लेकिन लोगों पर अिसका कोअी प्रभाव नहीं होता, क्योंकि अिन सदिच्छापूर्ण प्रस्तावोंकी अर्थहीन शब्दावलीसे अुन्हें कोअी मार्गदर्शन प्राप्त नहीं होता। अुनका अगर कोअी अर्थ होता है तो वह अितना ही कि केन्द्रीय सरकारको अमुक राज्यमें भारी अुद्योगोंकी स्थापनामें करोड़ों रुपये खर्च करना चाहिये। लेकिन ये भारी अुद्योग गरीबोंको किसी भी तरहकी मदद नहीं पहुंचाते। वे हमारी पूंजी-संपत्तिका क्षय करते हैं, पर अुसके बदलेमें अुन्हें जितना काम-धंधा पैदा करना चाहिये, अुतना काम-धंधा वे पैदा नहीं करते। लेकिन अिसका सबसे अधिक दुःखदायी परिणाम तो यह होता है कि लोगोंमें स्वावलंबनकी आदतका विकास नहीं हो पाता; कारण, अुन्हें मालूम नहीं है कि वे अपने पुरुषार्थ और सरकारकी अुचित मददके आधार पर क्या कर सकते हैं और अुन्हें क्या करना चाहिये। अिस बातको अवकाश और प्रोत्साहन मिले तो ही लोग पुरुषार्थवान् बन सकते हैं और तभी वे योजनाकी सफलताके लिअे प्रयत्न करनेको प्रेरित हो सकते हैं। बिजली या दूसरी चालक शक्तियोंके निर्माणकी योजनायें कितनी ही बड़ी और अुत्पादक क्यों न हों, अुनसे कोअी फल हासिल नहीं हो सकता।

हमारे आर्थिक चिन्तनमें अिस गड़बड़ीने हमारे प्रचलित विचारोंमें जो रूप अख्तियार किया है, वह अिस प्रकार है: हमारा सारा सोच-विचार और सारी योजना, जिसे मिली-जुली अर्थ-व्यवस्था कहा जाता है, अुसके ढांचेमें फंस गअी है। अिस अर्थ-व्यवस्थाके दो विभाग हैं — सार्वजनिक विभाग जिस पर राज्यका स्वामित्व है और खानगी विभाग। अिस विभाजनमें हमारी अर्थ-व्यवस्थाके सबसे बड़े और बुनियादी हिस्सेको, यानी खेती और ग्रामोद्योगोंवाले हिस्सेको भुला दिया जाता है। या यों कहें, जैसा कि कुछ लोग कहते हैं, कि अुसे खानगी विभागके अन्तर्गत मान लिया जाता है यद्यपि साधारणतः खानगी विभागमें बड़े बड़े यंत्र-अुद्योगोंका ही समावेश किया जाता है।

जिसे खानगी विभाग कहा जाता है, वह अिस अर्थनीतिसे अेक तरफ कुछ खुश भी होता है, दूसरी तरफ कुछ नाराज भी होता है। योजनामें पूंजी-प्रधान यानी भारी और केन्द्रित अुद्योगोंको स्थान दिया जायगा, यह बात अुन्हें अच्छी मालूम होती है, क्योंकि वह अुन्हें नयी अर्थ-व्यवस्थामें सुरक्षित स्थानका आश्वासन देती है। लेकिन अगर ये सारे अुद्योग राज्यकी ओरसे चलाये जानेवाले हों, तो पूंजीपतियोंको अिससे नाराजी होगी। अब राज्यके जिम्मेदार मंत्रियोंके बार-बार घोषणा करने पर अुनको यह विश्वास हो गया है कि यह नयी अर्थ-व्यवस्था मिली-जुली ही होगी। तब वे मांग करते हैं कि अुनको प्रोत्साहन मिलना चाहिये, अधिक साफ शब्दोंमें जिसका मतलब यह होता है कि अुन्हें मुनाफा कमानेका ज्यादा अवकाश मिलना चाहिये और अुनका करका बोझ हलका किया जाना चाहिये। वे लोग अिसी तरह सोचते हैं, अिसका अेक स्पष्ट अुदाहरण श्री जे० आर० डी० टाटाके अभी हालके अेक कथनमें मिलता है। श्री टाटाने अुसमें मुख्यतः दो बातें कही हैं: अेक तो जनता और अुसकी कामको पूरा करनेकी क्षमताके बारेमें शंकाअें और दूसरे पूंजीपति स्वेच्छासे नये नये अुद्योगोंका विकास और विस्तार करें, अुसके लिअे आवश्यक प्रोत्साहनकी कमी।

अपने अिस कथनके प्रमाणमें कि पुराने पूंजीवादसे भिन्न पूंजीवादका भी अेक नया रूप और ढांचा अुतना ही भला और अच्छा है जितना कि समाजवादी ढांचा, श्री टाटाने अर्थशास्त्रके प्रतिष्ठित ग्रन्थोंके हवाले दिये। अुन्होंने कहा कि "आधुनिक पूंजीवाद अितना बदल गया है कि सौ साल पहले अुसका जो रूप था अुससे अुसका कोअी मेल नहीं रह गया है। अुसने कल्याण-राज्यकी अत्यन्त आधुनिक कल्पनाओंके अनुरूप अपनेको ढालनेकी और अिस तरह अुसके साथ भी चल सकनेकी आश्चर्यकारी क्षमता प्रगट की है।"

अिसी वक्तव्यमें अुन्होंने आगे कहा कि "१९वीं सदीका और २०वीं सदीके आरम्भिक वर्षोंका पूंजीवाद आज अुतना ही पुराना और अर्थहीन हो गया है जितना कि १९वीं और प्रारंभिक २०वीं सदीका समाजवाद।"

भगवान्‌को धन्यवाद है कि अुन्होंने यह दावा नहीं किया कि पूंजीवाद और समाजवाद दोनों ही अब मिल-जुलकर कल्याण-राज्यकी स्थापनाका प्रयत्न कर रहे हैं। बेशक, वे मिल तो रहे हैं, लेकिन दुर्भाग्यसे यह मिलन मित्रताकी भूमि पर नहीं, युद्ध-भूमि पर हो रहा है, जैसा कि दो जागतिक गुटोंके आपसी सम्बंधोंमें देखनेमें आता है।

भारतीय आदर्श न पूंजीवादका है, न समाजवादका, वह है सर्वोदयका। अिसलिअे राष्ट्रीय समृद्धिके लिहाजसे हमारा सच्चा औद्योगिक सेक्टर न तो राज्यके स्वामित्ववाला सार्वजनिक सेक्टर है और न खानगी पूंजीवादी सेक्टर है; वह है किसान और

www.vinoba.in

अुसके छोटे पैमानेके अुद्योगोंका विशाल राष्ट्रीय सेक्टर। ये छोटे पैमानेके अुद्योग ही हमारी आवश्यकताओंके अधिकांशकी पूर्ति करते हैं। अगर किसी प्रोत्साहनकी जरूरत है तो वह अिनके लिअे ही है। पूंजीपतिके लिअे अुसकी कोअी जरूरत नहीं है; अुसके पास तो ताकत और प्रभाव है और वह अपने लिअे आवश्यक वन्दोबस्त आप कर सकता है। कअी अर्थशास्त्रियों और अुद्योग-पतियोंने अपने हालके वक्तव्योंमें अिन छोटे अुद्योगोंकी क्षमतामें संदेह व्यक्त किया है, यह खेदकी बात है। हमारी सुख-शान्तिपूर्ण अर्थरचनाके संतुलित विकासके लिअे यह चीज खतरा अुपस्थित करती है। जैसा कि मैंने अेक पिछले लेखमें बताया है, हमारी अिस अर्थरचनाके दो समान हिस्से हैं; अेक है खेती, और दूसरा है विविध गृह-अुद्योग तथा छोटे अुद्योग और गोपालन। अिस बड़ी तसवीरमें भारी अुद्योगोंका कोअी महत्त्वपूर्ण स्थान नहीं है। तसवीरका मुख्य अंश तो अपने घरोंमें गृह-अुद्योग और ग्रामोद्योग तथा खेतोंमें खेती करनेवाली अुद्योगपरायण और स्वावलंबी किसान-प्रजाकी ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था ही है। अुसमें भारी अुद्योगोंका स्थान रह सकता है, लेकिन वह स्थान अितना नहीं होना चाहिये कि तसवीरकी मुख्य रेखाओंको ढंक ले। अगर दूसरी पंचवर्षीय योजनाको जनताकी सच्ची योजना बनना है, तो अुसका निर्माण अिसी ढंग पर होना चाहिये।

३–९–'५५ **मगनभाई देसाई**
(अंग्रेजीसे)

गोआके बारेमें अेक विचार-दोष

कभी कभी अैसा कहा जाता है कि गोआ-राज्यको फौजी कदम अुठाकर ले लेनेमें थोड़ी भी देर नहीं लगेगी। भारतकी अितनी शक्ति है कि हम अुसे देखते देखते अपने अधिकारमें कर सकते हैं! लेकिन अिस कथनमें विचार-दोष है। हकीकतोंको देखते हुअे भी यह ठीक नहीं कहा जायगा।

अिस तरहकी बात सुनकर सामान्य मनुष्यके मनमें क्या विचार पैदा होगा? वह तुरन्त कहेगा, तो अैसा करते क्यों नहीं? बेकार देर क्यों लगाते हो? भारत-सरकार या भारतके हम प्रजाजन कोअी शांतिवादी नहीं हैं, यद्यपि हम शांतिप्रिय जरूर हैं। परन्तु शस्त्र और सेनाके त्याग और संपूर्ण युद्ध-निषेधको कोअी स्वीकार नहीं करता। तो फिर अुस दृष्टिसे तो नहीं कहा जा सकता कि हम गोआमें फौजी कार्रवाअी नहीं कर सकते।

और हम जानते हैं कि आज सारे गैर-कांग्रेसी राजनीतिक दल कांग्रेसको और अुसकी सरकारोंको अुकसा कर अुस तरफ ले जाना चाहते हैं। गोआ-मुक्तिके प्रश्नका अिस तरह लाभ अुठाकर वे जाने-अनजाने अेक नया ही आन्तरिक प्रश्न खड़ा कर देते हैं।

परन्तु अिस तरह फौजी कार्रवाअीकी बात करना व्यवहार-नीतिकी दृष्टिसे गलत है। अिस तरह गोआ आसानीसे लिया नहीं जा सकता।

लड़ाअीका रास्ता आसान नहीं है, यह भी प्रजाको स्पष्ट बताना चाहिये। गोआ छोटासा प्रदेश है, अिस कारणसे अुसे फौजी ताकतसे अपने अधिकारमें करनेकी बात आसान नहीं हो जाती। आजकी दुनियामें अिसी तरह छोटी मालूम होनेवाली बातोंसे और फौजी ताकतके अभिमानके कारण राष्ट्रोंके बीच लड़ाअी छिड़ जाती है और अुसमें से विश्वयुद्ध फूट पड़ता है। यह कौन कह सकता है कि गोआके बारेमें अैसा नहीं होगा? चीन-फार्मोसा जैसी ही नाजुक और अत्यंत विस्फोटकारी स्थिति गोआमें भी समझकर चलनेमें ही बुद्धिमानी, दूरदर्शिता और सलामती है। और अुसीमें भारतकी प्रतिष्ठा और प्रगति निहित है। यह भी कोअी छोटी बात नहीं है कि यह कदम अुठानेमें भारतकी विदेश-नीति पर कलंक लगेगा और दुनियाके सामने अुसे लज्जित होना पड़ेगा। अपनी विदेश-नीतिसे जगतमें हमने जो शांतिबल कमाया है, वह हमारी बहुत बड़ी पूंजी है। अुसकी मददसे हम बिना लड़ाअीके गोआका प्रश्न हल कर सकते हैं।

अिसलिअे हमें देशकी जनताको स्पष्ट शब्दोंमें समझाना चाहिये कि गोआके लिअे फौजी कदम पुर्तगालके साथ लड़ाअी मोल लेने और जगतमें अपनी प्रतिष्ठा खोनेका कदम होगा। अिसलिअे वह रास्ता आसान नहीं है, छोटा नहीं है और लाभदायक भी नहीं है। अिससे अुलटा समझनेकी भूल मूर्खतामें शुमार होगी। अतः भारतका स्वराज्य प्राप्त करनेके प्रश्नकी तरह ही गोआका प्रश्न हल करनेका अधिक जल्दीका, अधिक आसान, अधिक शोभनीय और अधिक अुचित मार्ग शांतिसे काम लेनेका है। यह रास्ता आज भारतकी जनता अपनी सरकारकी मददसे ले सकनेकी अनुकूल स्थितिमें है। आज अुस रास्ते हम जो जाने-अनजाने चले जाते हैं, अुसके बजाय अधिक ज्ञानपूर्वक हमें अैसा करना चाहिये।

अिस तरह, आन्तर-राष्ट्रीय व्यवहारमें भी हमारा राष्ट्रीय मार्ग शांतिका हो, यह अेक व्यावहारिक आवश्यकता हो गअी है। सिद्धान्तकी दृष्टिसे देखें तो भी वही सच्चा मार्ग है, और दुनियामें अहिंसा-मार्गको अपनानेका बीड़ा अेक राष्ट्रके नाते हमने अुठाया है।

अिसलिअे सत्याग्रहके प्रयोग आज अन्य राष्ट्रोंके साथके व्यवहारमें करनेकी स्थिति पर हम आ पहुंचे हैं। यह अेक नया प्रयोग है, जिस पर हमें गहराअीसे विचार करना चाहिये। गांधीजीसे जो शिक्षा हमने प्राप्त की हो, अुसे ध्यानमें रखकर अिसका विचार हमें करना चाहिये। अिस दृष्टिसे यह सवाल गंभीर बन जाता है। अुसका विचार गोआ तुरन्त ले लेनेकी भावनामें बहे बिना हमें करना चाहिये।

२०–९–'५५ **मगनभाई देसाई**
(गुजरातीसे)

बाढ़ोंका सन्देश

सिन्ध और गंगाकी समृद्ध घाटीकी तरह बाढ़ें भी भव्य और विशाल हिमालयकी देन हैं। अिस अुपजाअू मैदानके निवासियोंका, खास करके पूर्वी अुत्तरप्रदेश, अुत्तरी बिहार और बंगाल तथा अुत्तर-पूर्वी आसामके भागोंके निवासियोंका, युगोंसे अिन बाढ़ोंके साथ सम्बन्ध रहा है, जो नियमित रूपसे हर साल आती रहती हैं। हमारे लोग, जिन्हें तथाकथित 'शिक्षित' और 'बुद्धिमान' लोग अपढ़, पिछड़े हुअे, ग्रामीण और न मालूम क्या क्या कहते हैं, अपने अनोखे धैर्य, सूझ-बूझ और विवेकबुद्धिसे बहादुरीके साथ अिन बाढ़ोंका सामना करते रहे हैं और अिनके कारण अुनके सन्तुलित जीवन-क्रममें कोअी बाधा नहीं पड़ी है। लेकिन पिछले कुछ समयसे अिन बाढ़ोंका प्रकोप बढ़ गया बताया जाता है। बेशक, पिछले साल अुत्तर बिहारको जिन बाढ़ोंने बरबाद कर दिया, वैसी बाढ़ें वहां पहले कभी नहीं आअी थीं। अिस साल पूर्वी-अुत्तरप्रदेशको तबाह करनेवाली बाढ़ें भी वैसी ही हैं। कुछ बहुत पुराने बांध—जैसे गोरखपुरके पास और आजमगढ़ जिलेमें—टूट गये, जिन्होंने बाढ़की भयंकरताको और बढ़ा दिया। तकदीरसे मरे हुअे लोगोंकी संख्या बड़ी नहीं है। और पशुधन व अन्नधनकी बरबादीका अन्दाज तो आम तौर पर हवाअी दौरेके बाद राजनीतिक अनुमानकर्ताओं द्वारा ही लगाया जाता है।

ये बाढ़ें सचमुच अभिशाप हैं, अैसा असंदिग्ध भावसे नहीं कहा जा सकता। अगर नदियोंमें बाढ़ें नहीं आतीं, तो अुत्तर भारतका भूगोल और अितिहास और अिस कारणसे सारे भारतका भूगोल और अितिहास आजसे बिलकुल भिन्न होता। बाढ़के कारण प्रचण्ड रूप धारण करनेवाली नदियां अक्सर जमीन पर अुपजाअू

www.vinoba.in

मिट्टीकी सतह फैला कर कुछ समय बाद अपने मामूली प्रवाह पर लौट आती हैं। पिछले साल मुझे अिस बातका बड़ा मनोरंजक अनुभव हुआ, जब अपनी 'पड़ती' जमीन भूदानमें देनेवाले अेक जमींदारने स्थानीय भूदान-कार्यालयमें आकर कहा कि अुसकी पहले भूदानमें दी हुअी जमीनका (जिसे बाढ़ने सोनेकी तरह कीमती बना दिया था) बंटवारा मुलतवी कर दिया जाय, क्योंकि वह अुसके बदले दूसरी जमीन भूदानमें देगा!

फिर भी अिस बातसे अिनकार नहीं किया जा सकता कि अिन बाढ़ों द्वारा होनेवाली तबाही और बरबादी हर साल बढ़ती जा रही है। यह अेक अैसा सत्य है, जिस पर गहरा विचार करना और पूरा ध्यान देना चाहिये। विभिन्न राज्य-सरकारें बाढ़ग्रस्त प्रदेशोंके लोगोंके कष्ट कम करनेके लिअे हर साल करोड़ों रुपये खर्च करती हैं। बाढ़ों पर नियंत्रण रखनेके लिअे सरकारी संगठन भी कायम किये गये हैं और कोसी-योजना जैसी बड़ी बड़ी बांध-योजनाओं पर भी अमल किया जा रहा है। लेकिन कौन नहीं जानता कि अुन राहत-कामोंसे गांवोंके अधिक बोलनेवाले या अधिक धनी वर्ग ही लाभ अुठाते हैं? वास्तवमें जिसे कष्ट भोगना पड़ता है, अुसकी अक्सर कोअी सुनवाअी नहीं होती। लेकिन मुझे कबूल करना चाहिये कि अिस स्थितिके लिअे किसीको निश्चित रूपसे दोष नहीं दिया जा सकता। यह कहनेकी जरूरत नहीं कि सामान्य मनुष्यके लिअे अधिकसे अधिक कष्ट भोगनेवाले लोगों तक पहुंचना असंभव है — सरकारी अधिकारी या दुनियादारीके रंगमें रंगे हुअे धारासभाके किसी सदस्यके लिअे तो यह और भी असंभव है।

हम फिर बाढ़ोंसे बढ़नेवाले संकटकी बात पर लौटें। यह सच है कि अिंजीनियरीकी कुशलता हमारी कुछ नदियोंको वशमें कर सकती है और अुनके प्रचण्ड प्रकोपको मिटा सकती है। लेकिन यह बात हमें कभी भूलनी नहीं चाहिये कि बाढ़ें, भले वे मामूली हों या भयंकर, हमारे जीवनकी संगिनी बनी रहेंगी। तब हम अुनका सामना कैसे करें? क्या करदाताओंके पैसेको 'डोल' या मुफ्त राहतके रूपमें नष्ट करके? मुझे डर है कि अैसा किया गया तो हालत बदसे बदतर हो जायगी। और यहीं मैं अिस समस्याके केन्द्र पर आता हूं। प्रश्नके रूपमें यह पूछा जा सकता है: बाढ़-ग्रस्त भागमें सबसे ज्यादा हमारे ध्यानमें क्या बात आती है? अिसका अनिवार्य अुत्तर यह है कि वहांके लोग, खासकरके पुरुष वर्ग, हाथ पर हाथ धरे निकम्मे बैठे रहते हैं। खेतीकी जमीन पानीमें डूब जानेके कारण अुनके पास करनेके लिअे कोअी काम ही नहीं रह जाता। जीविका कमानेके लिअे अुनके पास कोअी कामधन्धा नहीं रहता। अुनकी दस्तकारियों और ग्रामो-द्योगोंके योजनाबद्ध नाशने — जिसे अंग्रेजोंने शुरू किया था और जो आज तक जारी रहा है — अुन्हें जीविका कमानेके सारे साधनोंसे वंचित कर दिया है। यह निर्विवाद रूपसे कहा जा सकता है कि बाढ़का प्रकोप ग्रामोद्योगोंके नाशके अनुपातमें ही बढ़ता रहा है। जितनी अधिक मात्रामें ग्रामवासियोंको अुनके अुद्योगोंसे वंचित किया जाता है, अुतनी अधिक मात्रामें अुन्हें बाढ़ोंसे नुकसान पहुंचता है।

अिसी बुनियादी सत्यने विनोबाको नीचेके नतीजे पर पहुंचाया है:

> "हमारी असली समस्या बाढ़ों या अकालोंकी नहीं, बल्कि ग्रामोद्योगोंके नाशकी है। भयंकर सत्य तो यह है कि बाढ़ग्रस्त भागोंके लोग निठल्ले बैठे हैं। अगर गांधीजीकी सलाह पर अमल किया जाता, तो चरखा चलाकर वे बदलेमें अनाज प्राप्त कर सकते थे। भारत जैसे विशाल देशमें किसान वर्ग केवल खेती पर निर्भर करके जिन्दा नहीं रह सकता। अुसके जिन्दा रहनेके लिअे ग्रामोद्योगोंका होना लाजिमी है।"

काम करनेकी जरूरत लोग जोरोंसे महसूस करते हैं। अेक स्थान पर अुन्होंने विनोबासे कहा कि हम बिलकुल निठल्ले बैठे हैं; हमें मुफ्त मदद या मुफ्त खाना नहीं चाहिये; हमें काम चाहिये, हम चरखा चलानेको तैयार हैं। अिसके सिवा, यह बात याद करने जैसी है कि अुत्तरप्रदेशके रचनात्मक कार्य करनेवाले दो प्रमुख आश्रम — स्व० स्वामी सत्यानन्द द्वारा संस्थापित दोहरी-घाट (आजमगढ़ जिलेमें) का हरिजन गुरुकुल और बाबा भगवानदास द्वारा संस्थापित बरहज (देवरिया जिलेमें) का परमहंस आश्रम — बाढ़-पीड़ित लोगोंको मदद करनेके लिअे चरखा-केन्द्रके रूपमें ही शुरू हुअे थे।

हमें चरखेके बारेमें कट्टर आग्रह रखनेकी जरूरत नहीं है। महत्त्वकी बात तो यह है कि अिन हिस्सोंमें कुछ अैसे गृह-अुद्योग खोले जायं जिनसे लोग अपनी रोटी कमा सकें। विद्वान और निष्णात लोग अिस समस्या पर विचार करें और अिसका सही हल खोजें। अगर चरखा अुन्हें सबसे ज्यादा सुविधापूर्ण, सुलभ और साधन-सम्पन्न मालूम हो, तो अुन्हें सारे डर या दिखावा छोड़ कर अुसे अच्छी तरह आजमा देखना चाहिये।

(अंग्रेजीसे)

सुरेश रामभाअी

भूदान-प्राप्ति और वितरण

[ता० १६-९-'५५ तक]

क्रमांक	प्रदेश	कुल प्राप्त भूमि (अेकड़में)	वितरित भूमि (अेकड़में)
१.	आसाम	१,९५०	—
२.	आंध्र	२२,३७२	—
३.	अुत्तरप्रदेश	५,५३,६४०	६५,६५८
४.	अुत्कल	२,०९,६८१	१३,२१०
५.	कर्नाटक	३,१२२	२६९
६.	केरल	२५,११३	३१५
७.	गुजरात	३९,२४०	६,४००
८.	तामिलनाड़	४२,०७३	५८५
९.	दिल्ली	९,२४५	९०
१०.	पंजाब-पेप्सू	१४,२४२	६१६
११.	बंगाल	१०,५९६	१,३६३
१२.	बम्बअी	१२३	—
१३.	बिहार	२३,५९,८७९	३४,८०९
१४.	मध्यप्रदेश	१,१६,६१७	३७,०८२
१५.	मध्यभारत	५१,९८७	३११
१६.	महाराष्ट्र	२८,१४६	—
१७.	मैसूर	७,७९६	—
१८.	राजस्थान	३,५९,२२६	१४,५४१
१९.	विंध्यप्रदेश	६,८८३	७७१
२०.	सौराष्ट्र	४१,०००	१,५००
२१.	हिमाचल प्रदेश	२,०२५	—
२२.	हैदराबाद	१,०९,५२९	३३,६७४
		४०,१४,४८५	२,११,१९४

सर्व-सेवा-संघ, गया

कृष्णराज मेहता
दफ्तर-मंत्री

www.vinoba.in

साबुनका अुद्योग कैसे बढ़ाया जाय?

स्वच्छता और सफाअीकी दृष्टिसे साबुन या अुसके जैसी कोअी मैल निकालनेवाली चीज हमारे जीवनके लिअे निहायत जरूरी है। अिसलिअे अुसमें काम आनेवाले कच्चे माल और अुसके अुत्पादनमें हमें परावलंबी नहीं होना चाहिये।

युरोपमें प्रति मनुष्य सालाना ३०० से ४०० औंस साबुन काममें लिया जाता है। हमारे देशमें यह औसत १२।। औंस आता है। अिस हिसाबसे हमारे देशमें साबुनका अुपयोग बहुत कम है, अैसा कहा जा सकता है। यह सच है कि गांवोंमें बहुतसे लोग साबुनके सिवा दूसरी चीजोंका अुपयोग करके कपड़े, शरीर वगैरा साफ कर लेते हैं। फिर भी अब वहां साबुनका अुपयोग बढ़ता जाता है। अिसलिअे अिस अुद्योगको स्वावलंबनके आधार पर अपने पैर पर खड़ा करनेकी जरूरत है। अिसके लिअे क्या किया जाय?

अिस समय देशके ५५ बड़े कारखानोंमें हर साल ८८,००० टन साबुन तैयार किया जाता है, तथा ३ से ४ हजार छोटे कारखानों और गृह-अुद्योगोंकी अिकाअियोंमें ४५,००० टन साबुन बनाया जाता है। अिस तरह कुल १,३३,००० टन साबुन हमारे देशमें हर साल तैयार होता है। अिस अुत्पादनमें वृद्धि करनेके लिअे खादी-ग्रामोद्योग बोर्डने पंचवर्षीय योजनाके लिअे कुछ सुझाव दिये हैं, जो ध्यान देने जैसे हैं।

१. हमारी अतिरिक्त साबुनकी जरूरत पूरी करनेके लिअे निबौरी, करंज, महुवा वगैराके अखाद्य तेलोंका ही अुपयोग किया जाना चाहिये।

२. 'पेनल ऑफ ऑअिल अेण्ड सोप अिंडस्ट्री' के अंदाजके मुताबिक देशमें अखाद्य तेलोंके लगभग १२० लाख टन बीज अिकट्ठे किये जा सकते हैं। और अुनसे ९ लाख टन तेल निकाला जा सकता है। जब कि आजके कार्यक्रममें ६.७५ लाख टन बीज ही अिकट्ठे करने पड़ेंगे और अुनसे ५०,००० टन तेलका अुत्पादन हो सकता है।

३. अिस ५०,००० टन तेलमें से साबुन बनानेके लिअे तो केवल १०,००० टन ही काममें आयेगा, जब कि बाकीका ४०,००० टन तेल खाद्य तेलोंका अुपयोग करनेवाले कारखानोंमें अुपयोगमें आना चाहिये।

४. तेल-साबुनके अुत्पादनके लिअे ४१६ तेल-केन्द्र, ३०० तेल-साबुन केन्द्र और ३०० वैसे केन्द्र सघन विस्तारोंमें खोले जाने चाहिये। अिन तमाम केन्द्रों द्वारा दूसरे पांच वर्षोंमें १७,००० टन साबुनकी अतिरिक्त जरूरत पूरी की जा सकेगी।

५. अिस सारी योजनाका कुल खर्च ९.४५ करोड़ रुपये आयेगा अैसा अनुमान है। अुसके द्वारा ३५,४६० मनुष्योंको पूरे समयका काम और ६४,८०० मनुष्योंको मौसमी दो महीनेका काम मिल सकेगा और अुनके बीच लगभग १९ करोड़ रुपये मजदूरीके तौर पर बांटे जा सकेंगे।

अिस तरह योजना करनेसे नीचेके लाभ होंगे:

(क) अभी तक बेकार जानेवाले तेलका अुपयोग होगा और अुसका अुद्योग चलेगा।

(ख) कारखानोंमें साबुनके लिअे काममें आनेवाला खाद्य तेल मनुष्योंके अुपयोगके लिअे बचेगा।

(ग) अेक लाख लोगोंको पूरे समयकी या कम-ज्यादा समयकी रोजी मिलेगी।

ये सब लाभ अभी कारखानोंमें हो रहे साबुनके अुत्पादनको बंद किये बिना मिल सकेंगे। कारखानोंका अुत्पादन विकेन्द्रित हो जाय तो अिससे कहीं ज्यादा लोगोंको काम दिया जा सकता है। परन्तु बोर्डने अभी अुस दृष्टिसे विचार नहीं किया है।

(गुजरातीसे)

वि०

हम आत्मा हैं

[ता० १६-६-'५५ को देवदाल पड़ाव (अुत्कल) पर दिये हुअे प्रार्थना-प्रवचनसे।]

यहां पर कुछ भाअी तेलगू जाननेवाले हैं, कुछ अुड़िया जाननेवाले हैं और यहांके निवासी कंध भाषा जाननेवाले हैं। यह जिला मध्यप्रदेशके नजदीक होनेके कारण यहां पर कुछ हिन्दी जाननेवाले लोग भी हैं। अिस तरह अपने देशमें हजारों वर्षोंसे कअी भाषायें चलती हैं। अिनमें से कुछ भाषाअें तो अैसी हैं, जो दूसरे समझते नहीं हैं। आदिवासियोंकी भाषायें भी अलग-अलग होती हैं। जैसे कंध, सौरा, संथाली, कोया, मुंडा, अुरांव, गोंड आदि। आदिवासी भी अेक-दूसरेकी भाषा नहीं समझते हैं। अिस तरहसे हम लोग जो अेक-दूसरेकी भाषा नहीं जानते हैं, वे कहांसे आये होंगे, और किसका मूल कहां होगा, कोअी नहीं जानता है। लेकिन कहींसे भी आये हों, आज सैकड़ों वर्षोंसे हम सब हिन्दुस्तानमें बसते हैं। यहांकी आबोहवा, यहांकी भूमि और यहांके अन्नसे हमारा गुजारा चलता है। अिसलिअे हम सबका यह धर्म हो जाता है कि हम भाषा-भेद, जाति-भेद आदि सब भेदोंको भूल जायं। प्रेमको पहिचानें, मिल-जुलकर काम करें और पड़ोसीकी सेवा करना अपना धर्म समझें।

धर्मका मूलभूत विचार यह है कि हम अपने बाहर जाकर अपने नजदीक जो भी अड़ोसी-पड़ोसी लोग हैं, अुनकी सेवामें अपनेको मिटा देते हैं। कोअी भी जानवर अपनेको अपनी देहसे ही सम्बन्धित समझता है। वह यह नहीं पहचानता कि मैं शरीरसे कोअी अलग हूं। परन्तु मनुष्यका यह भाग्य है कि वह पहचानता है कि हम अिस शरीरसे अलग हैं। यह शरीर तो हमारा चोला है, वस्त्र है। जैसे हमने अभी कोअी वस्त्र पहना है, लेकिन कल अिच्छा हो जाय तो हम अुसे अुठाकर अलग कर सकते हैं और फिर जरूरत मालूम होने पर अुसे पहन भी सकते हैं, अुसी तरह हम यह देह भी छोड़ सकते हैं और फिरसे ले सकते हैं। हम तो देहसे अलग हैं, बिलकुल दूसरे ही हैं। हम माताके अुदरसे जन्मे थे अुसके पहले हम नहीं थे, अैसी बात नहीं है। अुसके पहले भी हम थे। और मर जानेके बाद भी हम खत्म होंगे, अैसी बात नहीं। मरनेके बाद भी हम रहेंगे। हमारा शरीर जल जायगा, फिर भी हम रहेंगे।

जानवर अिस बातको पहचान नहीं सकता है, लेकिन मनुष्य अगर सोचेगा तो पहचान सकता है। अिसलिअे मनुष्यको यह सोचना चाहिये कि हमारा यह शरीर हमें थोड़े दिनोंके लिअे मिला है, तो वह केवल सेवाके लिअे है। अिसको खिलाना-पिलाना पड़ता है, क्योंकि अिससे काम लेना है, सेवा लेनी है। अगर नहीं खिलाते तो अुसमें सेवा करनेकी ताकत नहीं रहेगी। अिसलिअे अुसे खिलायेंगे। लेकिन यह देह भोजनके लिअे नहीं है, सेवाके लिअे है। हम चरखा कातते हैं तो अुसमें तेल डालते हैं, क्योंकि तेल डाले बिना चरखा काम नहीं देगा। लेकिन चरखा तेल खानेके लिअे नहीं होता है, सूत कातनेके लिअे है। वैसे ही हमारी देह परोपकारके लिअे, दूसरोंकी सेवाके लिअे है। लेकिन अगर कल कोअी चरखेमें बोतलों तेल डालेगा तो हम अुसे मूर्ख कहेंगे। चरखेका सुख कातनेमें है, तेल देनेमें नहीं। अुसी तरह हमें परोपकारमें आनन्द महसूस होना चाहिये, खानेमें नहीं। पड़ोसीके लिअे तकलीफ भोगनेमें हमें आनन्द होना चाहिये।

हमें अैसा नहीं समझना चाहिये कि हम केवल अेक देह हैं और अिस देहके लिअे भोग प्राप्त करना हमारा कर्तव्य है। अगर हम अपनेको देह समझते हैं और देहके भोगको ही प्रधान मानते हैं, तो अेक-दूसरेकी वासनाओंकी टक्कर होती है और हर कोअी

www.vinoba.in

अेक-दूसरेको लूटनेकी कोशिश करता है। फिर जो जोरदार होता है वह लूटनेमें कामयाब होता है और जो कमजोर होता है वह नाकामयाब होता है, अिसलिअे दुःखी बन जाता है। आज समाजमें यही हो रहा है। पड़ोसी-पड़ोसी अेक-दूसरेसे छीनना चाहते हैं। परसोंकी बात है। अेक व्यापारी भाअी हमें दान देनेके लिअे आ रहे थे। अुनकी जेबमें अेक हजार रुपये थे। रास्तेमें किसी चोरने जेब काटकर रुपये चुरा लिये। वे भाअी दान देना ही चाहते थे। अिसलिअे फिर अुन्होंने लिखकर दिया कि आगे दान देंगे। लेकिन जिसने वे पैसे चुराये, वह अपनेको सुखी मानता होगा और यह भाअी दुःखी हुअे होंगे। अिस तरह अेकके दुःखमें दूसरेका सुख और अेकके सुखमें दूसरेका दुःख होता है। बाजारमें बेचनेवालों और खरीदनेवालोंमें यही चलता है। चीज सस्ती खरीदी गअी तो खरीदनेवाला सुखी होता है और बेचनेवाला दुःखी। अुसी तरह आसपासके लोग बीमार पड़ते हैं, दुःखी होते हैं, तो डाक्टरको सुख होता है, क्योंकि अुसे पैसे मिलते हैं। यह तो बिलकुल जंगली जानवरोंकी-सी बात हो गयी। शेर खरगोशको खानेके लिअे दौड़ता है। अगर वह खरगोशको पकड़ता है तो सुखी हो जाता है और अगर खरगोश भाग जाता है तो वह दुःखी होता है। अिस तरह खरगोशके दुःखमें शेरका सुख और शेरके दुःखमें खरगोशका सुख होता है।

हमें यह महसूस करना चाहिये कि हमारा जीवन परोपकारके वास्ते है। यही बात हम गांव-गांव जाकर समझा रहे हैं। हम कहते हैं कि तुम अिस देशमें हजारों वर्षोंसे अड़ोसी-पड़ोसीके जैसे रहते हो। तुम्हारी भाषा, तुम्हारे धर्म, तुम्हारी जातियां अलग अलग हैं, लेकिन यह जातियां, भाषा और धर्म देहके साथ हैं, तुम्हारे साथ नहीं हैं। हम तो देहसे अलग हैं। हम आत्मा हैं, हम अीश्वरके अंश हैं। हमने यह अलग-अलग चोले पहने हैं, अिसलिअे कि अिनके जरिये हमें कुछ सेवा करनी है। सेवा करके अिस देहको फेंक देंगे और फिर अपने मूल रूपमें जायेंगे।

भाअियो, आजकल हमने अपना जो जीवन बनाया है, जिसमें हम देहको खिलाने-पिलानेमें ही खुशी मानते हैं, वह गलत है। हमें दूसरोंको खिलाकर फिर खाना चाहिये। और अगर दूसरोंको खिलानेके बाद कुछ बचा नहीं तो फाका करना चाहिये। फाका करनेमें आनन्द मालूम होना चाहिये। हरअेकको सोचना चाहिये कि हमारे गांवमें जितने लोग हैं, अुनकी सेवा करके फिर हम खायेंगे। हर कोअी गरीब है और हर कोअी श्रीमान है। चार आनेवाला अगर दो आनेवालेकी तरफ देखे तो अपनेको श्रीमान समझेगा और आठ आनेवालेकी तरफ देखे तो अपनेको गरीब समझेगा। अुसी तरह लखपति करोड़पतिकी तरफ देखेगा तो अपनेको गरीब समझेगा और हजार रुपयेवालेकी तरफ देखेगा तो अपनेको श्रीमान समझेगा। अिसलिअे समझना चाहिये कि हर कोअी गरीब है और हर कोअी श्रीमान है। जो हमसे भी दुःखी हैं, अुनके वास्ते कुछ देना चाहिये और फिर खाना चाहिये।

विनोबा

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

सर्वोदय

लेखक: **गांधीजी**; संपा० **भारतन् कुमारप्पा**

कीमत २-८-० डाकखर्च ०-१२-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-१४

शहदका घरेलू अुद्योग

देशकी बढ़ रही आबादीके लिअे ज्यादा अनाज चाहिये और ज्यादा अनाजके अुत्पादनके लिअे या तो ज्यादा जमीन चाहिये या कम जमीनमें ज्यादा पैदा करना चाहिये। लेकिन अिस तरह अमर्यादित सुधार करते रहना मुश्किल है। अिसलिअे जमीनका अुपयोग किये बिना ही खुराकके काम आनेवाली चीजोंके अुत्पादनका बड़ा महत्त्व है। मछली और शहद जैसी चीजें अिसी श्रेणीकी हैं। अुनमें शहदके अुद्योगकी यह विशेषता है कि वह सात्त्विक खुराक है, अुसमें हिंसा नहीं होती और वह थोड़ी पूंजी तथा थोड़ी कुशलतासे ही घरेलू ढंग पर चलाया जा सकता है। अपना मुख्य धंधा छोड़े बिना ही, अुसके साथ-साथ कम या अधिक प्रमाणमें शहदका अुत्पादन हो सकता है। अेक अतिरिक्त लाभ यह है कि मक्खियोंके सहवाससे खेतीको भी फायदा पहुंचता है।

शहदका धंधा वैसे तो बहुत प्राचीन है। लेकिन शहद अिकट्ठा करनेकी पुरानी पद्धति अस्वच्छ और हिंसक है। आधुनिक अुत्पादन-पद्धति स्वच्छ और अहिंसक होती है। अुसका प्रचार करके शहदका अुत्पादन बढ़ानेकी ओर किसानोंको घर बैठे कुछ अधिक कमा सकनेकी सुविधा देनेकी योजना दूसरी पंचवर्षीय योजनाके लिअे ग्रामोद्योग बोर्डने की है।

नयी सुधरी हुअी पद्धतिसे आजकल देशमें २७,३१३ छत्तोंसे अढ़ाअी लाख रतल अहिंसक शहद पैदा होता है। प्रति छत्ता अुत्पादन ९.१५ रतल होता है। यह अुत्पादन बहुत कम है। अिसी पद्धतिसे अमेरिकामें प्रति छत्ता २० से ४० रतल तक शहद पैदा होता है। वहां ८० लाख छत्तोंसे ३० करोड़ रतल शहद प्राप्त किया जाता है।

बोर्डकी योजनाके अनुसार अगले पांच वर्षमें तालीम और साधनों आदिकी पूरी व्यवस्था की जाय, तो ५ लाख कुटुंबोंके द्वारा ५० लाख छत्तोंका निर्माण और पालन कराया जा सकता है और ५ करोड़ रतल शहद प्राप्त किया जा सकता है। अिस तरह अिनमें से प्रत्येक कुटुंबकी आयमें खासी वृद्धि हो सकेगी। लोगोंको अमृत-जैसी अुपयोगी खुराक मिलेगी और किसानोंको स्वावलंबी बनानेमें मदद होगी।

अनुभवी किसान १० से १५ छत्ते पाल सकता है और अुनसे २०० से ३०० रुपये तककी आय कर सकता है। अिसके लिअे मौसममें लगभग तीन माह तक प्रतिदिन दो घंटे और बाकी महीनोंमें प्रतिदिन अेक घंटा दिया जाय तो काफी होगा।

अैसे पांच लाख कुटुंबोंके सिवा अुससे सम्बन्धित कामोंसे दस हजार बढ़अी, लोहार, तथा दूसरे अुद्योगवालोंको भी रोजी मिलेगी।

यदि कोअी अपना पूरा समय अिसी धंधेमें लगाना चाहे, तो तीन माहकी तालीमके बाद वह ७५ छत्ते पाल सकता है और अुनसे प्रतिवर्ष १,००० से १,५०० रुपये तक कमा सकता है।

अिस धंधेके विकास और अुत्तेजनके लिअे अगले पांच वर्षमें ७२ लाख रुपयेके खर्चका अंदाज किया गया है। अिस खर्चसे बहुत ही अुपयोगी काम हो सकेगा और वह काम अवश्य करने जैसा है।

(गुजरातीसे) **वि०**

विषय-सूची

		पृष्ठ
हमारा राष्ट्रीय कर्तव्य	विनोबा	२३३
शंकाअें और प्रोत्साहनकी कमी	मगनभाअी देसाअी	२३६
गोआके बारेमें अेक विचार-दोष	मगनभाअी देसाअी	२३७
बाढ़ोंका सन्देश	सुरेश रामभाअी	२३७
भूदान-प्राप्ति और वितरण	कृष्णराज मेहता	२३८
साबुनका अुद्योग कैसे बढ़ाया जाय?	वि०	२३९
हम आत्मा हैं	विनोबा	२३९
शहदका घरेलू अुद्योग	वि०	२४०

www.vinoba.in